RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारत में सूफी आगमन : प्रचार प्रसार

पंकज कुमार मिश्र

शोध छात्र–एम.बी.पी.जी. कालेज हल्द्वानी नैनीताल

'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति के सन्दर्भ में अनेक विद्वानों ने अपना अलग–अलग मत प्रस्तुत किया। कुछ विद्वानों ने सूफी शब्द की व्युत्पत्ति सुफ्फा–इस्लामी पैगम्बर के जीवन काल के दालान में रहने वाले लोगों को 'अतृसुफ्फा' कहा तो कुछ विद्वानों ने सूफी शब्द की व्युत्पत्ति के लिए 'सोफानता' को जिम्मेदार माना जो कि यह एक तरह की तरकारी हुआ करती है, जो सन्तों को प्रिय थी। अनेक विद्वानों के विचारों पर दृष्टि डालने के बाद 'अब्दुल कासिम अल कशीरी' के विचारों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। "अबू नसर अल सर्राज ने अपनी पुस्तक 'किताब अललुमा' में सूफी शब्द पर विचार करते हुए बताया है कि 'सूफी शब्द अरबी के 'सूफ' शब्द से निकला है जिसका अर्थ 'ऊन' है।"१

सूफी शब्द की परिभाषा और व्याख्या प्रारम्भ से ही अनेकों प्रकार से दी जाती रही है। यह आन्दोलन के रूप में जब आया तो भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी धर्मोत्थान का सबसे बड़ा आन्दोलन था । जब यह आन्दोलन भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया तो इसके प्रभाव की सीमायें काफी दूर तक फैली । इसका मत इस्लाम के अन्तर्गत् कोई ऐसा संगठित सम्प्रदाय नहीं था जो कि उसके मतों और सिद्धान्तों को एक सुसंगठित नियमित प्रणाली के अन्तर्गत रख सके । "प्रारम्भिक काल में इसका कोई सम्प्रदाय नहीं बना था और व्यक्तिगत रूप से वे साधना में लीन रहते थे लेकिन बाद में चलकर उनके सिद्धान्त,मत और सम्प्रदाय संगठित हुए।"२

सूफी जिनके भारतीय उपमहाद्वीप के पदार्पण मात्र से इन्होनें प्रेम की पूरी परिभाषा ही बदल दी । मुसलमानों ने ही नहीं बल्कि हिन्दुओं ने भी इस्लाम के प्रति विश्वसनीयता और रूझान दिखाया । सूफियों के आगमन से वर्षों से पड़ा हुआ मरूस्थलीय हृदय मानों हरा भरा हो गया। इसके सन्दर्भ में ' राम चन्द्र शुक्ल ' ने स्वयं लिखा है कि – "हिन्दू हृदय और मुसलमान हृदय आमने–सामने करके अजनबीपन मिटानों वालों में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा। इन्होनें मुसलमान होकर भी हिन्दुओं की कहानियाँ हिन्दुओं की ही बोली में बड़ी सहृदयता से कहकर उनके ही मर्म स्पर्शिनी अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामंजस्य दिखा दिया।"३ सूफी शब्द का व्यवहार के रूप में आने की बात कही जाय तो यह किसी व्यक्ति के नाम साथ उपाधि के रूप में कब से जुड़ा हुआ मिलता है, इसका कहीं पर सही से पता नहीं चल पाता परन्तु ' कुशैरी' ने इस शब्द का प्रचलन ईसा की नौवी शताब्दी के प्रारम्भ से ही स्वीकार किया है। जबकि इसके विपरीत 'सुफी ' शब्द का प्रचलन में आने के और दूसरे भी मत है। 'शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी' ने स्वयं लिखा है– "पैगम्बर की मृत्यु के २०० वर्षों के बाद ही इस शब्द का आविर्भाव हुआ।"४

सूफी सन्त प्रारम्भिक समय में अपना जीवन मुसलमान साधक मुख्य रूप से फकीरों की तरह व्यतीत करते और गरीबों की तरह रहते थे। ये स्वभाव से बडे विनम्र और मिलनसार हुआ करते थे। इनके साधना की मुख्य विशेषता मानों कठोर जीवन व्यतीत करना और प्रलोभन से बचकर परमात्मा का स्मरण करते रहना हो। कुछ विद्वानों को मानना है कि सूफी इस्लामी ही थे। परन्तु इसके विपरीत कुछ आलोचक यह भी मानते हैं कि ये इस्लाम से भिन्न थें। इसके सन्दर्भ में 'राम पूजन तिवारी ' ने स्वयं लिखा है कि "जितनी यह बात सही कि सूफियों की बहुत सी प्रवृत्तियाँ और सिद्धान्त इस्लाम से ढूढने से नहीं मिलते । उतनी यह बात भी सही है कि कोई भी प्रवृत्तियाँ सिद्धान्त बाहर से इन पर लाद नहीं दिये गये। "५

लोगों की यह मान्यता हुआ करती है कि यदि व्यक्ति इस जन्म में सुख–सुविधा का परित्याग कर कष्ट भोगता है तों उसे पुण्य मिलता है। लेकिन सूफी सम्प्रदाय की मान्यता इससे भिन्न थी। सूफी लोग इसे मिथक कहा करते थे। और उनकी मान्यता थी कि जीवन के सुखों को प्राप्त करने के लिए मैने फकीरी वेशभूषा तथा उनकी जीवन शैली नही अपनायी अपितु परमात्मा का अनुग्रह और आध्यात्मिक अवस्था को हम प्राप्त करना चाहते है। उसके लिए गरीबी अपने आप में वैसी कोई चीज नहीं और न दूसरे जन्म के सुखों को कोई महत्व ही हैं। इस पर स्वयं ' रामपूजन तिवारी' ने लिखा है कि सूफी न केवल फकीर हैं, जो गरीबी को अपनाये हुये है और न केवल सन्यास जीवन ही बिताने वाला है बल्कि इन दोनों

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के साथ ही वह और भी कुछ है। उसके भीतर अध्यात्मवाद और रहस्यवाद की प्रवृत्तियाँ भी रहती हैं।"६

भारत में यदि सूफियों के आगमन की बात की जाये तो एक निश्चित तिथि बताना थोड़ा सा कठिन हो जाता है। लेकिन इतना जरूर कहा जा सकता है,मुलसलमानों के आक्रमण के तुरंत बाद से ही सूफी साधकों का भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश हुआ । सर्वप्रथम सूफियों का प्रवेश सिंध, पंजाब और पश्चिमोत्तर से होता हुआ सम्पूर्ण देश में फैल गया। १६वीं शताब्दी के मुस्लिम इतिहासकार के मतानुसार "प्रथम मालावार में मुसलमान तीर्थ यात्रियों का एक दल आया जो सिलोन में आदम के पाद चिन्ह का दर्शन करने जा रहा था । इस दल का नेता 'शेख शरफ बिन मालिक' था। जो मालावार के राजा को धर्मोपदेश द्वारा मुसलमान बनाने में सफल हुआ। लोगों का विश्वास है कि यह घटना 'हजरत मोहम्मद' के जीवनकाल की है। और बहुतों का ख्याल है कि ईसा की ९वीं शताब्दी की यह बात है।"७

ऐतिहासिक ग्रंथों से हमें पता चलता है कि हिन्दुस्तान में आने वाले प्रथम सूफी 'शेख अबू अली असिन्धी' थे। जो कि ८वीं शताब्दी में सिन्ध आये । इसके बाद 'शेख इस्माइल लाहौरी' आया जो कि महमूद गजनवी के काल (१००५ ई.) में लाहौर आया इसके पश्चात लाहौर में सूफियों और उलेमाओं का आगमन प्रारम्भ हुआ । "भारतवर्ष में सूफी मत का प्रवेश तथा भारतीय परिपार्श्व में सूफी मत ४०५ बन्नू तक पहुंच गया था।"८ दक्षिण भारत में अरब व्यापारियों का दल बहुत पहले ही आने लगा था। यह भी कहा जाता है कि 'जमोरिन' का व्यापार अरब देशों के साथ बहुत चलता था । इसीलिए उसने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने में अहम भूमिका निभाई।

सुल्तान महमूद गजनी भारत के विजय अभियान के साथ दातागंज बढश पंजाब में आकर इस्लाम धर्म का संदेश पहुंचाने का कार्य आरम्भ किया इसके लिए 'लाहौर' को कुछ समय के लिए प्रमुख केन्द्र बनाया। 'शेख दातागंज बढश' ने 'तसव्वुफ' के विकास के लिए अनेकों रचनायें लिखी। भारत वर्ष में बहुत से सूफी सन्त आये और वे यहाँ आकर योगियों, बौद्धों तथा जैनों से बहुत कुछ सीखा। सूफियों की उदारता उनका सन्तों जैसा जीवन तथा भारतीय विचारधारा में समानता होने के कारण ही इन सूफी साधकों के प्रति श्रद्धा और निष्ठा बढ़ी। यह युग करामातों का युग था। इन दिनों सिद्धों, तांत्रिकों एवं नाथपंथियों का पूरा जोर था। सूफियों करामातों की कहानियों से जनता का ध्यान उनकी तरफ आकृष्ट हुआ तथा इनके प्रति जो झुकाव था वह अकेले मुसलमानों का ही नहीं था अपितु हिन्दू भी बराबर के साझीदार थे। ईसा के १२वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब मुहम्मद गोरी भारत पर आक्रमण किया उस समय बहावलपुर इस्लामी विद्या का बहुत बड़ा केन्द्र बन चुका था। जहाँ से सिन्ध और दक्षिण-पश्चिम पंजाब में इस्लाम धर्म का प्रचार होना शुरू हो चुका था और इसके बाद भी यहाँ पर सूफी आते रहे।

उस समय के मुस्लिम साधकों में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध 'मुईनुद्दीन चिश्ती' हुए थे। जिनकी मृत्यु १२३६ ई. में हुई। जहाँ पर आज भी बहुत बड़ा मेला इन्हीं के उपलक्ष्य में लगता है। जब ये तीर्थयात्रा पर मदीना जा रहे थे उसी समय उनके हृदय में भारत में आनें की पुकार सुनाई पड़ी। इस तरह पैगम्बर ने उनके सपने में कहा कि " परमात्मा ने भारतवर्ष को तुम्हारे हाथों में सौपा है। जहाँ जाकर अजमेंर में बस जाओ परमात्मा की कृपा से तुम्हारे तथा तुम्हारे शिष्यों के पुण्यबल से इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार होगा।"९

आगे इनके विषय में कहा जाता है कि ये वहाँ से अजमेर आये और यहाँ पर इनकी इतनी प्रसिद्धी हुई कि हिन्दू और मुसलमान सभी समान भाव से इनसे जुड़े। इनके शिष्या परम्परा और प्रचार-प्रसार इस तरह हुआ कि उस समय के बादशाह और रजवाड़े इनके शिष्य हुये- जिनमें ख्वाजा कुतुबुद्दीन और फरीद्दीन शंकरगंज जो कि बाद बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध हुये।

ये सूफी सन्त धीर-धीरे सम्प्रदायों में विभक्त होने लगे और यह सम्प्रदाय धीरे-धीरे अन्य देशों में फैलने लगा। सूफीमत के विकास क्रम में प्रसिद्धी प्राप्त साधकों के शिष्य- प्रशिष्य होते गये और सम्प्रदायों को नाम भी भिन्न-भिन्न सूफी साधकों कें नाम पर होने लगा। ईसा की १२वी शताब्दी तक इस सम्प्रदाय का रूप स्पष्ट हो चुका था। "आइने अकबरी में तत्कालीन भारत के १४ सूफी सम्प्रदायों का उल्लेख हुआ है। चिश्ती, सुहरवर्दी, हबीजी तफूरी, करखी, सकती, जुनेदी काजरूनी, तूसी , फिरदौसी, जेदी, इयादी, अधमी और हुबेरी। भारत में ४ सूफी सम्प्रदाय विशेष प्रसिद्ध हुये- चिश्ती, सुहरवर्दी , कादरी, नक्शबंदी सम्प्रदाय।"१०

चिश्ती सम्प्रदाय-

'चिश्ती' को फारसी भाषा में 'खिश्त' कहा जाता है। इस सम्प्रदाय में 'चिल्ल' शब्द का प्रचलन है। इस सम्प्रदाय के अनुसार चिल्ल उसे कहा जाता है जब कोई साधक चालीस दिन तक किसी मस्जिद या किसी कमरे में अपना समय व्यतीत करे, और इस बीच वह अल्पाहार पर का पालन करे। भारत में इस सम्प्रदाय को लाने का श्रेय स्वयं 'ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती' को ही है। इस सम्प्रदाय का प्रचार भारतीय उपमहाद्वीप के तीनों देशों में भारत, पाक, बांग्ला में फैला। इस सम्प्रदाय का प्रचार सिर्फ मुस्लिमों तक ही सीमित नही रहा बल्कि हिन्दुओं के निम्नवर्ग में इसका प्रचार ज्यादा हुआ। ये अद्वैतवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन करते है तथा इसमें संगीत की भी

प्रधानता है। इसमें यह माना जाता है कि साधक संगीत सुनते-सुनते भावाविष्टावस्था को प्राप्त हो जाता है। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का स्वयं मानना था कि "संगीत आत्मा का भोजन है।"

चिश्ती का मानना था, कि जब हम बाह्य जगत की सीमाओं को पार करते देखते है तो प्रेमी, प्रेमिका और प्रेम सभी एक जैसे प्रतीत होते हैं अर्थात् एकत्व के क्षेत्र में सभी एक हैं। इस सम्प्रदाय के दूसरे प्रसिद्ध सन्त 'ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' थे जो कि चिश्ती के शिष्य थे और भारतवर्ष में आकर इनकी उत्तराधिकारी हुए। "सन ११६२ में शहाबुद्दीन के साथ चिश्ती दिल्ली आये। इसके बाद ११६५ में वे अजमेंर आये और यहीं पर स्थायी रूप से रह गये।"११ अजमेर में इनकी दरगाह आज भी है जहाँ पर प्रत्येक वर्ष विशाल मेले का आयोजन हुआ करता है। इनकी मृत्यु यही पर १२३६ ई. में हुई। चिश्ती के दरगाह के मस्जिद स्वयं सम्राट अकबर द्वारा निर्मित करवायी गई थी। इतना ही नहीं सम्राट अकबर प्रत्येक वर्ष अजमेंर जाया करते थे। इस तरह से यह सम्प्रदाय अपने समय में बहुत ही लोक प्रिय हो गया था। परन्तु यह स्थायित्व स्थायी न रहा । "इस सम्प्रदाय की अवनति १५७२ के बाद होने लगी तथा ईसा की १८वीं शताब्दी के मध्य तक इसका ह्रास चरम पर पहुंच गया। "१२

सुहरवर्दी-

भारतवर्ष में सूफी सम्प्रदायों में चिश्ती सम्प्रदाय के बाद सुहरवर्दी सम्प्रदाय आया । इसके प्रवर्तक 'शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी' थे। इनके विषय में कहा जाता है कि ये भारत में अपनी शिष्य 'हमीदुद्दीन नागौरी' और 'शेख बहाउद्दीन जकारिया को सूफी मत के प्रचार के लिए भेजा और स्वयं भारत कभी नहीं आये। "भारत में सुहरवर्दी सम्प्रदाय के प्रवर्तक बहाउद्दीन जकारिया थे जो कि मुल्तान के थें।"१३ इस सम्प्रदाय में भी रहस्यात्मक आदर्शवाद को मान्यता मिली जो कि चिश्ती परम्परा से भिन्न था। इन्होने इस्लामी परम्पराओं को अपनाया और चिश्तियों द्वारा ग्रहीत गुरू के समीप झुककर प्रणाम करने की हिन्दू परम्परा का विरोध किया। आगे चलकर यह

सम्प्रदाय भी कमजोर पड़ने लगा। परिणामस्वरूप यह सम्प्रदाय दो शाखाओं में बंट गया। एक शाखा कट्टर इस्लाम के अनुकूल चलने वाली थी जिसे 'बेशरा' कहा गया और दूसरी शाखा जिसे 'फिरदौसिया' थी। जिसमें 'मनेर शरीफ' कें प्रसिद्ध सन्त 'सर्फुद्दीन एहिया मनेरी' हुए। इन्होने 'मकतूवात' में बताया है कि प्रत्यक्ष दर्शन की दशा में मनुष्य और ब्रम्ह के सम्बन्ध नहीं बदलते, बल्कि उनमें एकता का बोध होता है। 'मृगावती' के रचयिता 'कुतबन' भी इसी सम्प्रदाय से थे।

कादरी सम्प्रदाय -

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'अब्दुल कादिर अल जिलानी' (१०७८-११६६) थे। ११२७ ई. में अध्यात्मिक जीवन के सम्बन्ध में इन्होने प्रचार करना शुरू कर दिया। इनके करामातों की कहानियाँ सुनकर लोग इनसे जुड़ने लगे। धीरे-धीरे इनका शिष्य सम्प्रदाय बढ़ने लगा। कादरी सम्प्रदाय सनातन पंथी इस्लाम से निकट सम्बंध बनाये रखा। यही कारण है कि मुसलमानों नें इसका अधिका स्वागत किया। लोग इन्हें स्नेह पूर्वक अनेक नामों से पुकारते थे जैसे 'पीर-दस्तगीर' या 'पीरे-पीराँ' आदि । अब्दुल कादिर जिलानी की मृत्यु के ३०० वर्ष बाद इस सम्प्रदाय का अस्तित्व भारत में आया। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भारतवर्ष में मुहम्मद गौस हुए। पेशावर से दिल्ली तक एक बड़ा क्षेत्र था। जहाँ के लोग इन पर विश्वास करते थे। मुहम्मद गौस भारत में जैसे ही प्रवेश किया बहुत कम समय में इनके शिष्यों की एक लम्बी अंकतालिका हो गई। दिल्ली के सुल्तान 'सिकन्दर लोदी' उनके शिष्य थे।

इस सम्प्रदाय के लोग अपनी टोपी में गुलाब का फूल लगाते थे। इस सम्प्रदाय में गुलाब का फूल बहुत पवित्र माना जाता था। इसका कारण यह था कि यह पैगम्बर का प्रतीक माना जाता था। इस सम्प्रदाय में संगीत का कोई स्थान न था। आगं चलकर यह सम्प्रदाय दो उपसम्प्रदायों में विभक्त हो गया । इसमें से प्रथम 'रजाकिया तथा दूसरा बहाबिया' था।

नक्शबंदी सम्प्रदाय-

यह चौथा मुख्य सम्प्रदाय है और इसका विस्तार बहुत ही विस्तृत क्षेत्र पर- टर्की, समरकन्द, भारत का उत्तर-पश्चिमी भाग , सिन्ध तथा सम्पूर्ण ईरान में था। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'ख्वाजा उबैदुल्ला ' को कुछ लोग मानते हैं। लेकिन अधिकांश विद्वान 'ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद' कों मानते हैं। इस सम्प्रदाय को मानना है कि आात्मा फिर दूसरा शरीर धारण कर इस संसार में लौट आता है और कोई परमात्मा की तरफ ध्यान देने पर जोर देता है। उनका विश्वास है कि दूसरे के बलिदान से अन्य किसी के जीवन को बचाया जा सकता है। इस सम्प्रदाय के लोग हाथ में लम्बी छड़ी रखते हैं और सिर के बाल विखेरे हुए हवा में लहराते हुए देखे जाते हैं। 'कुव्वतुल इरादतन' को बढाते -बढाते परमात्मा में लीन हों जाना इनका परम लक्ष्य माना जाता है। इस सम्प्रदाय का भारतवर्ष में विस्तार 'अहमद फारूकी सरहिन्दी' के द्वारा किया गया। सूफियों के सिद्धान्त को सनातनपंथी इस्लाम के निकट ले आये। सूफियों की उदारता को वहीं तक वे बर्दाश्त करने के लिए तैयार थे जहाँ तक 'कुरान और सुन्ना' से दूर हो, इतना ही नहीं ये संगीत को धर्म के विरूद्ध मानते थे।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस तरह से सूफियों का आगमन ईरान, इराक और मध्य एशिया से आया हुआ माना जाता है, और भारतवर्ष में इसका खुले मन से स्वागत किया गया। सूफी सन्तों की उदारता ने कट्टरवादी धार्मिकता की सीमाये तोड़ दी । सूफियों ने धर्मशास्त्रवादियों की अनेक पाबंदियां तोड़ी और प्रेमाख्यान की सारी परम्परायें बदल दी और हिन्दू जनमानस में यह पूरी तरह से घुल मिल गया। और उसने इन्ही की शैली में वार्तालाप भी किया। सूफीवाद यह सन्देश देता है कि सबसे प्रेम करो, दूसरों की भलाई में अपनी भलाई समझों क्योंकि प्रेम ही समस्त ब्रम्हाण्ड का आधार है।

–सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

१. किताब अललुमा– अबू नसर अल सर्राज
२.सूफीमत– साधना और साहित्य–रामपूजन तिवारी पृ. १६७
३. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
४. आवारी फुलमारीफ– शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी
५. सूफीमत– साधना और साहित्य – रामपूजन तिवारी पृ. १७६
६. वही पृ.१७७
७.The Preaching of Islam- T.W. Arnold pg- 264-65
८- Glossary of Punjab tribes & castes 1919 – Zuhirruddin Ahmad
9. The Preaching of Islam – T.W. Arnold pg 281
१०.सूफीवाद के अध्यात्मिक आयाम – जाफर रजा
११.सूफीमत– साधना और साहित्य – रामपूजन तिवारी पृ.४५०
१२.वही पृ.४६४
१३. वही पृ. ४६६